प्राथमिक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Primary Group)

अमेरिकन समाजशास्त्री सी॰एच कुले का समाजशास्त्रीय जगत में एक महान योगदान प्राथमिक समूह की अवधारणा है। प्राथमिक समूह सामाजिक समूहों का सबसे अधिक प्रचलित प्रकार है। कूले (cooley) ने सर्वप्रथम 1909 ई॰ मे प्राथमिक समूह की अवधारणा का उल्लेख अपनी पुस्तक 'सोशल आर्गनाइजेशन' (Social organization) में किया।

कूले के अनुसार :—

"प्राथमिक समूह से मेरा तात्पर्य उनसे है, जिनकी विशेषताएँ आमने सामने का घनिष्ठ संबंध और सहयोग है। ये कई अर्थों में प्राथमिक है, किन्तु मुख्य रूप से इस अर्थ में कि ये व्यक्ति के सामाजिक स्वभाव और आदर्शों के निर्माण में मौलिक है।"

इनकी परिभाषा से यह स्पष्ट होता है प्राथमिक समूह के लिए आमने-सामने का घनिष्ठ संबंध एवं सहयोग का होना जरूरी है। साथ ही यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक समूह द्वारा व्यक्ति के स्वाभाव एवं आदर्शो का निर्माण होता है।

फिक्टर के अनुसार :—

प्राथमिक समूह ऐसे लोगों का अपेक्षाकृत चुस्त संकलन है जिनके बीच बारंबार आमने-सामने के संबंध होते है, एकता की भावना होती है और जो समान सामाजिक मूल्यों के प्रति कटिबद्ध होते है।"

फिक्टर की परिभाषा से चार बाते स्पष्ट होती है — (i) प्राथमिक समूह व्यक्तियों का चुस्त संगठन है, (ii) इन व्यक्तियों के बीच बारंबार आमने-सामने के संबंध होते है, (iii) इनमें एकता की

भावना होती है और (iv) वे समान सामाजिक मूल्यों का पालन करते हैं।

लुण्डबर्ग के अनुसार :-

"प्राथमिक समूह का अभिप्राय: दो या दो से अधिक व्यक्तियों का एक दूसरे के साथ घनिष्ठ, एकता लाने वाली एवं व्यक्तिगत ढंग से व्यवहार करने से है।"

लुण्डबर्ग की परिभाषा से 4 तथ्यों को बताया गया है:- (i) प्राथमिक समूह दो या उससे अधिक व्यक्तियों का संकलन है, (ii) इनके सदस्यों में घनिष्ठ संबंध होते हैं, (iii) इनमें एकता की भावना होती है और (iv) इनके बीच व्यक्तिगत व्यवहार होते हैं। अर्थात अनौपचारिक व्यवहार।

उपरोक्त विद्वानों की परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक समूह व्यक्तियों का एक ऐसा छोटा संगठन है जिसमें अत्यधिक घनिष्ठता, उद्देश्यों की समानता, अपनापन की भावना, सहयोग सहानुभूति पाया जाता है। परिवार, क्रीड़ा समूह और पड़ोस इसके महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। प्राथमिक समूह की महत्त्वपूर्ण विशेषता आमने-सामने का संबंध है। इस समूह में व्यक्तियों के बीच घनिष्ठ संबंध पाए जाते हैं। इनका आकार छोटा तथा लोगों के बीच का संबंध व्यक्तिगत होता है। इसमें व्यक्तियों के बीच "हम की भावना" पायी जाती है। अर्थात इस समूह में लोग 'मैं की भावना' का त्याग कर "हम की भावना" पर जोर देते हैं। इस प्रकार, इस समूह में व्यक्तियों के बीच का संबंध स्वाभाविक, घनिष्ठ, व्यक्तिगत व पूर्ण होते हैं।